मैं एक पत्रकार हूँ

" **मैं एक पत्रकार हूँ**
हूँ तू मैं भी एक देशभक्त
समाज सेवक एवं थोड़ा कलाकार भी
लेकिन उससे क्या?
मैं समाज-परिवार-सरकार में बेकार हूँ
क्योंकि मैं एक पत्रकार हूँ।

आचार अच्छे हैं मेरे
विचार अच्छे हैं मेरे
स्वभाव अच्छा है एवं प्रभाव भी
फिर भी अपने परिवार पर भार हूँ।
क्योंकि मैं एक पत्रकार हूँ।

किसी ने सच ही लिखा है
है अंधेरी रात पर दिया जलाना किसने है रोका
लेकिन यहाँ न तो दिया है न बाती
फिर जलाऊँ कैसे?
मैं तो रौशनी में भी अंधकार हूँ
क्योंकि मैं एक पत्रकार हूँ।

सोचता हूँ मौत को गले लगा लूं
पर जहर वाला भी जहर देता नहीं
वो जानता है जेब से भीखार हूँ
क्योंकि मैं एक पत्रकार हूँ। "